

Amire Ahle Sunnat Se Etikaaf Ke  
Bare Me 10 Suwal Jawab (Hindi)

एकमात्र निशान : 300  
Weekly Booklet : 200

# अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिक्वाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब

सर्कल 21

अमिर में इस्लामी कानून की सुदृष्टिकत 03

अब इस्लामी कानून को लागू करने के लिए क्या करना है ? 10

अमिर में कंठही बनना क्या है ? 04

अमिर को अब के इस्लामी कानून से सुदृष्टिकत की ? 15

सर्वे सुदृष्टिकत, अमीरे अहले सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत, इस्लामी इस्लाम के लिए अब क्या करना

मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी محمّد ابراهيم انصاري

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ  
مَا بَعْدَ فَاعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## अमीरे अहले सुन्नत से

### ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब<sup>(1)</sup>

**दुआए खलीफ़ए अत्तार :** या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत से ए'तिकाफ़ के बारे में 10 सुवाल जवाब” पढ़ या सुन ले उसे सुन्नत के मुताबिक़ ए'तिकाफ़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उस की बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “ أَكْبَرُوا الصَّلَاةَ عَلَى يَوْمِ الْجُمُعَةِ ”  
فَإِنَّهُ مَشْهُودٌ تَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَإِنَّ أَحَدًا لَنْ يُصَلِّيَ عَلَيَّ إِلَّا عَرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهُ حَتَّى يُغْرَمَ مِنْهَا  
या'नी जुमुआ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्यूं कि येह यौमे मशहूद (या'नी मेरी बारगाह में फ़िरिशतों की खुसूसी हाज़िरी का दिन) है, इस दिन फ़िरिशते (खुसूसी तौर पर कसरत से मेरी बारगाह में) हाज़िर होते हैं, जब कोई शख्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस के फ़ारिग़ होने तक उस का दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है ।” हज़रते अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ का बयान है कि मैं ने अर्ज़ की : (या रसूलल्लाह ! ) और आप के विसाल के बा'द क्या होगा ? इर्शाद फ़रमाया : “हां ! (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बा'द भी (मेरे सामने

① ... .. येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत مِنْ بَرَكَاتِهِمُ الْعَالِيَةِ से किये गए सुवालालात और उन के जवाबात पर मुशतमिल है ।

इसी तरह पेश किया जाएगा) । إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ । या'नी अल्लाह पाक ने ज़मीन के लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के जिस्मों का खाना ह़राम कर दिया है । فَتَبِيُّ اللَّهُ حَرْمَ يُرْزُقِي پس अल्लाह पाक का नबी जिन्दा होता है और उसे रिज़क़ भी अता किया जाता है । ” (ابن ماجه، 2/291، حديث: 1637)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

**सुवाल :** क्या पिछली उम्मतों में भी ए'तिकाफ़ होता था या येह उम्मते मुहम्मदिय्यह के लिये खास है ?

**जवाब :** ए'तिकाफ़ बहुत ही पुरानी इबादत है जैसा कि दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब “फ़ैज़ाने रमज़ान” के बाब फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़ के सफ़हा 228 पर है : पिछली उम्मतों में भी ए'तिकाफ़ की इबादत मौजूद थी चुनान्वे पारह 1 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 125 में है :

﴿وَعَهْدًا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَنَّ طَهَّرَا بَيْتِي لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : “और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ व सुजूद वालों के लिये ।”

**ऐ अशिक़ाने रमज़ान !** त़वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ के लिये का'बए मुशरफ़ा की पाकीज़गी और सफ़ाई का खुद रब्बे का'बा की त़रफ़ से फ़रमान जारी किया गया । मशहूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि मस्जिदों को पाक साफ़ रखा जाए, वहां गन्दगी और बदबूदार चीज़ न लाई जाए, येह सुन्नते अम्बिया है । येह भी मा'लूम हुवा कि ए'तिकाफ़ इबादत है और पिछली उम्मतों की नमाज़ों में रुकूअ और सुजूद दोनों थे । येह भी मा'लूम हुवा कि

मस्जिदों का मुतवल्ली (मुन्तज़िम) होना चाहिये और मुतवल्ली सालेह या'नी परहेज़ गार इन्सान हो। मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : त्वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ बड़ी पुरानी इबादतें हैं जो ज़मानए इब्राहीमी में भी थीं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह : 1, अल बकरह, तहूतल आयह : 125, स. 29, मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/350)

**सुवाल :** रमज़ानुल मुबारक में बहुत से लोग मसाजिद में इफ़्तारी करते हैं, उन के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत से मुतअल्लिक़ मदनी फूल इर्शाद फ़रमा दीजिये।

**जवाब :** मस्जिद में खाने पीने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत न करें बल्कि सवाब के लिये निय्यत करें और येह निय्यत फ़क़त रमज़ानुल मुबारक में ही नहीं बल्कि सारा साल जब भी मस्जिद में आएँ भले एक सेकन्ड के लिये भी तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लें। निय्यत के अल्फ़ाज़ येह हैं : **نَوَيْتُ سُنَّتَ الْإِعْتِكَافِ** या'नी मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की। याद रहे कि येह निय्यत अरबी अल्फ़ाज़ में करना ही शर्त नहीं है बल्कि अरबी अल्फ़ाज़ से निय्यत उसी वक़्त होगी जब दिल में निय्यत मौजूद हो और अरबी के मा'ना भी पता हों। फ़क़त रटा रटाय़ा कह दिया और ए'तिकाफ़ की निय्यत की त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं है तो येह निय्यत नहीं मानी जाएगी। उर्दू बल्कि किसी भी ज़बान में निय्यत कर सकते हैं मसलन मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

याद रहे कि मस्जिद में खाना पीना सोना जाइज़ नहीं है अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ली तो अब जिम्नन मस्जिद में खाना, पीना, सोना, इफ़्तार, आबे ज़मज़म पीना, नियाज़ खाना वगैरा सब जाइज़

हो जाएगा। अगर खाना पीना सामने आ गया और ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं की थी तो अब फ़क़त खाने पीने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं कर सकते। (در معيار و رد المحتار، 2/525؛ مؤيد، 1/648، हिस्सा : 3) अलबत्ता सवाब के लिये अब भी निय्यत हो सकती है लिहाज़ा निय्यत करने के बा'द कुछ ज़िक्रो दुरूद कर लें मसलन 12 मरतबा दुरूद शरीफ़ या कलिमा शरीफ़ पढ़ लें। 12 के अ़दद से महब्बत की वज्ह से 12 मरतबा पढ़ने का कहा है वरना इतनी बार ही पढ़ना ज़रूरी नहीं। कुछ न कुछ ज़िक्रो दुरूद पढ़ लें, अब चाहें तो खाना पीना और इफ़तार कर सकते हैं।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/368)

**सुवाल :** मस्जिद में कंधी करना कैसा है ?

**जवाब :** मस्जिद में कंधी करने से बचना होगा क्यूं कि इस से मस्जिद में बाल झड़ेंगे, अलबत्ता अगर कोई एह़तियात से कंधी करता है मसलन चादर बिछा कर करता है ताकि बाल गिरें तो चादर पर गिरें तो इस तरह कंधी करना जाइज़ है। मस्जिद में कंधी करने से मन्अ़ ही करना चाहिये वरना ए'तिकाफ़ में अगर मो'तकिफ़ीन सब जगह कंधियां करना शुरूअ़ कर देंगे तो चूंकि सब को एह़तियात करना आती नहीं है इस लिये बाल गिराते रहेंगे हालां कि मस्जिद को साफ़ सुथरा रखने का हुक्म है। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/181)

**सुवाल :** जो इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ करने के बा'द दीनी माहोल से दूर हो जाते हैं उन्हें दोबारा दीनी माहोल में कैसे लाया जाए ?

**जवाब :** ए'तिकाफ़ करने के बा'द सारे मो'तकिफ़ीन दीनी माहोल से दूर हो जाते हों ऐसी बात नहीं। अगर ऐसा होता तो आज हमें येह बहारें नज़र न आतीं। दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता इस्लामी भाइयों की

कसीर ता'दाद ए'तिकाफ़ की वजह से ही दीनी माहोल में आई है। दा'वते इस्लामी के मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ) के दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने का सबब भी ए'तिकाफ़ ही बना, इन्होंने ने दीनी माहोल से वाबस्ता होने का वाकि़आ खुद बताया था कि येह पहले मद्रसतुल मदीना बराए बालिगान में पढ़ने आते थे, फिर इन्होंने ने दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिक़त की। इस ए'तिकाफ़ की बरकत से इन पर ऐसा रंग चढ़ा कि इन्होंने ने दसैं निज़ामी (या'नी अ़लिम कोर्स) शुरूअ कर दिया और आज اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! दा'वते इस्लामी के काबिले फ़ख़्र मुफ़्ती हैं बल्कि मुफ़्तये इस्लाम बन चुके हैं। इसी तरह दा'वते इस्लामी के कई मुबल्लिग़ीन और जिम्मेदारान होंगे जिन्होंने ने ए'तिकाफ़ की वजह से दीनी माहोल को अपनाया होगा, मुम्किन है कि कई अराकीने शूरा भी ऐसे हों जो ए'तिकाफ़ की बरकत से दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हुए हों।

दा'वते इस्लामी के एक बहुत बड़े जिम्मेदार भी ए'तिकाफ़ ही की वजह से दीनी माहोल में आए थे। ए'तिकाफ़ करने से पहले इन्होंने ने दीनी माहोल में आना जाना शुरूअ कर दिया था जिस की वजह से इन पर कुछ न कुछ असर हुवा, फिर जब इन्होंने ने ए'तिकाफ़ किया तो इन की दुन्या ही बदल कर रह गई। येह अपने उस ए'तिकाफ़ का माहोल खुद बयान करते हैं कि “जब मैं ए'तिकाफ़ में बैठा तो मेरे दोस्त मुझ से मिलने आते थे चूँकि मैं खुद भी मज़ाक़ मसख़री का अ़दी था तो वोह मुझे बोलते कि येह सारे ड्रामे छोड़। क्या तू मौलाना लोगों को तंग करने के लिये बैठ गया है? मगर मैं बिल्कुल सन्जीदा हो गया और उन से ऐसा कोई मज़ाक़ न किया।” फिर

इन पर ए'तिकाफ़ का ऐसा रंग चढ़ा कि आज वोह एक अज़ीम निगरान बन कर लोगों के सामने मौजूद हैं और दुन्या की बहुत बड़ी ता'दाद इन की अक़ीदत मन्द है। अक्सरिय्यत इन के बयान से मुत्मइन होती है नीज़ इन का बयान सुनने वाले अपने अन्दर तब्दीली महसूस करते हैं। यकीनन येह सारी बहारेणें ए'तिकाफ़ की वज्ह से ही हैं इस के बा वुजूद अगर कोई शख्स ए'तिकाफ़ करने के बा'द भी नेकियों की राह पर नहीं आता और उस के अन्दर किसी किस्म की तब्दीली नहीं होती तो येह उस का अपना नसीब है।

हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ताबेई बुजुर्ग हैं, इन के फ़रमान का खुलासा है : बा'ज़ लोग इल्मे दीन हासिल करते हैं इस के बा वुजूद सुधरते नहीं बल्कि उन में ख़ूब बिगाड़ होता है जो फ़साद का बाइस बनता है।<sup>(1)</sup> या'नी अगर किसी के दिल में फ़साद का बीज मौजूद हो तो इल्मे दीन हासिल करने के बा वुजूद उस के दिल से फ़साद ही पैदा होगा कि वोह बीज दिन ब दिन परवरिश पाता रहेगा बिल आख़िर तनआवर दरख़्त बन कर फ़साद बरपा करेगा। क्यूं कि फल हमेशा बीज की मिस्ल ही हासिल होता है, जैसा बीज बोया जाएगा वैसा ही फल मिलेगा। अगर गेहूं (या'नी

1 ... हज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : इल्म की मिसाल तो बारिश के उस पानी की तरह है जो आस्मान से साफ़ो शफ़ाफ़ और मीठा नाज़िल होता है और दरख़्त उस को अपनी शाखों के ज़रीए ज़ब्ब कर लेते हैं। अब अगर दरख़्त कड़वा होता है तो बारिश का पानी उस की कड़वाहट में इज़ाफ़ा करता है और अगर वोह दरख़्त मीठा होता है तो उस की मिठास में इज़ाफ़ा करता है, बस यूंही इल्म बजाते खुद तो फ़ाएदे का बाइस है मगर जब ख़्वाहिशाते नफ़्स में गिरिफ़्तार इन्सान इसे हासिल करता है तो येह इल्म उस के तकब्बुर में मुब्तला होने का सबब बन जाता है और जब शरीफुन्नफ़्स इन्सान को येह इल्म हासिल होता है तो येह उस की शराफ़त, इबादत, ख़ौफ़ो ख़शिय्यत और परहेज़ गारी में इज़ाफ़ा करता है।

(حدائق نورية، 2/512)

गन्दुम) बोएंगे तो गेहूं मिलेंगे, जव बोएंगे तो जव मिलेंगे और चावल बोएंगे तो चावल मिलेंगे। इसी तरह बा'ज लोगों के दिलों में बद बख़्ती और शरारत का बीज होता है, येह लोग इल्मे दीन हासिल कर भी लें तो उस बीज की जड़ें इन के दिल में मजबूत हो चुकी होती हैं यूं वोह लोग फ़साद पैदा करने का सबब बनते हैं। नीज जिस खुश नसीब के दिल में शराफ़त और सआदत मन्दी का बीज होता है फिर वोह उस बीज की इल्मे दीन के ज़रीए ख़ूब आबयारी करता है और उस में मजीद निखार पैदा करने की कोशिश करता है तो वोह शख़्स एक नेक इन्सान और अल्लिमे बा अमल बन कर मुआशरे में उभरता है।

### अपने वक़्त की क़द्र कीजिये

ऐसे कई लोग मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ के लिये आते हैं जिन का अपनी इस्लाह के हवाले से कोई ज़ेहन नहीं होता तो वोह अपने दोस्तों के साथ ग्रूप बना कर फुज़ूल बातों में मशगूल होते हैं। अगर कोई दोस्त बाहर से कबाब समोसे ले आए तो वोह खाने में अपना वक़्त बरबाद कर रहे होते हैं। बा'ज तो मदनी मुज़ाकरे तक में शिर्कत नहीं करते हालां कि मदनी मुज़ाकरा ए'तिकाफ़ में सब से अहम सिल्सिला होता है। उन के कानों तक मदनी मुज़ाकरे की आवाज़ ज़रूर पहुंचती है मगर दिल में नहीं उतरती क्यूं कि येह सुनने के लिये बैठे ही नहीं होते तो इस की बरकतों से भी महरूम हो जाते हैं। हां! जो लोग मस्जिद के अन्दर बैठ कर तवज्जोह से मदनी मुज़ाकरा सुनने की सआदत हासिल करते हैं तो यकीनन उन के दिल पर भी असर होता है और वोह ढेरों बरकतें अपने दामन में समेट लेते हैं। लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन को चाहिये कि वोह अपने वक़्त की



कद्र करते हुए इसे फुज़ूलिय्यात में जाएअ़ करने के बजाए इल्मे दीन हासिल करने की कोशिश करें ।

## सारा साल रमज़ानुल मुबारक का इन्तिज़ार

रमज़ानुल मुबारक की आमद में अभी कुछ माह बाकी हैं लिहाज़ा जिस से हो सके वोह निय्यत कर ले कि **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ करूंगा । मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ का निहायत ख़ूब सूरत माहोल होता है लिहाज़ा हत्तल इम्कान फ़ैज़ाने मदीना में ही ए'तिकाफ़ करने की कोशिश कीजिये, वरना अपने अपने शहरों में जहां दा'वते इस्लामी के तहत ए'तिकाफ़ करवाया जाता है वहां ए'तिकाफ़ करने की तरकीब बनाइये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** बे शुमार फ़वाइदो बरकात नसीब होंगे । अगर एक माह का ए'तिकाफ़ करना मुम्किन न हो तो दस दिन के ए'तिकाफ़ की तरकीब कीजिये अगर येह भी न हो सके तो ए'तिकाफ़ में आना जाना ही कर लीजिये मसलन किसी को नोकरी पर जाना है तो वोह जाए और अपना काम पूरा कर के वापस आ जाए और जहां ए'तिकाफ़ हो रहा है वहीं रहे, घर न जाए बल्कि नोकरी के बा'द सारा वक़्त ए'तिकाफ़ वालों के साथ ही गुज़ारे, उन की सोहबत इख़्तियार करे, ऐसा करने से भी काफ़ी कुछ हासिल हो जाएगा । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ !** हमें सारा साल रमज़ानुल मुबारक का इन्तिज़ार रहता है बल्कि हम तो सारा साल येह दुआ मांगते हैं **اَللّٰهُمَّ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ بِصِحَّةٍ وَعَافِيَةٍ** "या'नी ऐ अल्लाह ! हमें सिद्दहतो अफ़ियत के साथ माहे रमज़ान से मिला दे ।" रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के भी क्या कहने ! रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ाओं में जो कैफ़ो सुरूर होता है वोह दीगर अय्याम में नहीं पाया जाता, जैसे ही रमज़ानुल मुबारक का

चांद नज़र आता है तो दिल पर एक अज़ीब कैफ़ियत तारी हो जाती है और जैसे ही ईद का चांद नज़र आता है दिल ग़म में डूब जाता है कि हाए अफ़सोस ! रमज़ान का बा बरकत और निहायत अज़मतो शान वाला महीना हम से रुख़सत हो गया, वोह सब कुछ चला गया जो रमज़ान की वजह से हमें नसीब हुवा था । **अल्लाह** पाक हमें सिद्दहतो अफ़ियत के साथ बार बार रमज़ानुल मुबारक का महीना नसीब फ़रमाए । **أَمِينِ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ।

## मुअम्मर इस्लामी भाई और मदनी मर्कज़ में ए'तिकाफ़

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** पूरे माहे रमज़ान का ए'तिकाफ़ करने की निय्यत फ़रमा लीजिये, चाहे आप ने गुज़श्ता बरसों में एक माह का ए'तिकाफ़ किया हो या न किया हो और निय्यत करते ही इस की तय्यारी भी शुरूअ कर दीजिये । अगर निय्यत सच्ची हुई तो निय्यत करते ही इस का सवाब मिलना शुरूअ हो जाएगा । बा'ज़ खुश नसीब तो ए'तिकाफ़ के ऐसे शैदाई होते हैं कि तरह तरह की आज़माइशों के बा वुजूद वोह ए'तिकाफ़ करने से पीछे नहीं हटते, खुसूसन हमारे मुअम्मर (या'नी बूढ़े) इस्लामी भाई सालहा साल से ए'तिकाफ़ कर रहे हैं, उन्हें मन्अ भी किया जाए तो नहीं मानते और किसी हाल में अपने घर जाने के लिये तय्यार नहीं होते । चूँकि इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बहुत रश होता है तो मा'ज़ूर इस्लामी भाई और हमारे मुअम्मर बुजुर्ग सख़्त आज़माइश में आ जाते हैं, इन को इस्तिन्जा वुजू के मुआमलात में काफ़ी परेशानी हो जाती है, इसी वजह से अब हम ने येह उसूल बना दिया है कि मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 50 साल से ज़ाइद उम्र के इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ में न बिठाया जाए । अलबत्ता फ़ैज़ाने मदीना में बा'ज़ ऐसे मुअम्मर इस्लामी भाई भी हैं जिन की

उम्र 70 बरस हो चुकी है लेकिन येह काफ़ी अरसे से फ़ैज़ाने मदीना में ही ए'तिकाफ़ कर रहे हैं लिहाज़ा सिर्फ़ उन इस्लामी भाइयों को फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ की इजाज़त है क्यूं कि अरसे दराज़ से फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने की वजह से उन इस्लामी भाइयों को काफ़ी तजरिबा हो चुका है, उन्हें मदनी मर्कज़ के उसूलों और जद्वल वगैरा का इल्म होता है, इस वजह से उम्मीद है कि येह दीगर इस्लामी भाइयों की तकलीफ़ का सबब नहीं बनेंगे। नए आने वाले मुअम्मर इस्लामी भाई जिन की उम्र 50 बरस से जाइद हो उन्हें फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने की इजाज़त नहीं क्यूं कि उन्हें फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ का तजरिबा नहीं होगा चूंकि पहले ही उम्र रसीदा होने की वजह से जिस्म काफ़ी कमज़ोर हो चुका होगा फिर ए'तिकाफ़ के जद्वल की वजह से मज़ीद कमज़ोरी हो जाएगी, अगर येह बीमार हो गए तो इन्हें संभालना मुश्किल होगा। नीज़ इस्तिन्जा ख़ानों और वुजू ख़ानों पर शदीद भीड़ होने की वजह से भी येह परेशान हो जाएंगे लिहाज़ा ऐसे मुअम्मर इस्लामी भाई मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने के लिये तशरीफ़ न लाएं। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/231)

**सुवाल :** क्या इस्लामी बहनें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ कर सकती हैं ?

**जवाब :** जी नहीं ! इस्लामी बहनें इज्तिमाई ए'तिकाफ़ नहीं कर सकतीं। क्यूं कि औरत के लिये मस्जिदे बैत या'नी घर का वोह हिस्सा जो उस ने नमाज़ पढ़ने के लिये मख़सूस किया हो उसी में ए'तिकाफ़ करने की इजाज़त है। (1/34494/3, 494) लिहाज़ा अगर किसी इस्लामी बहन को ए'तिकाफ़ करना हो तो वोह सिर्फ़ मस्जिदे बैत ही में करे। अगर घर में कोई जगह नमाज़ पढ़ने के लिये मख़सूस न हो तो ए'तिकाफ़ से पहले कोई जगह जैसे

घर का कोई कमरा या हिस्सा मख़सूस कर ले कि वोह उसी जगह नमाज़ पढ़ेगी फिर वहीं ए'तिकाफ़ भी कर ले। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/234)

**सुवाल :** मैं ए'तिकाफ़ करना चाहता हूँ, मुझे येह बताइये कि दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले एक माह के ए'तिकाफ़ में कोई कोर्स भी करवाया जाता है ?

**जवाब :** एक माह के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में सिर्फ़ कोर्स नहीं होता बल्कि कोर्सिज़ होते हैं और बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अलबत्ता इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के दौरान कोई Proper कोर्स नहीं करवाया जाता। लेकिन मज्मूई तौर पर बहुत कुछ सीखने को मिलता है। रोज़ाना दो मदनी मुज़ाकरे होते हैं जो एक अर्से से होते आ रहे हैं, सिद्दहत ने साथ दिया तो **بِسْمِ اللَّهِ** इस बार भी दो मदनी मुज़ाकरे होंगे। इस के इलावा नमाज़ सिखाई जाती है, दुआएं वगैरा याद करवाई जाती हैं और भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है, लिहाज़ा एक माह का ए'तिकाफ़ करने की सआदत ज़रूर हासिल कीजिये।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/244)

**सुवाल :** मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो मे'यार बयान फ़रमा दीजिये कि किस तरह के इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ के लिये लाया जाए ?

**जवाब :** इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के लिये सुलझे हुए इस्लामी भाइयों को लाना चाहिये, येह नहीं कि किसी को भी ले कर आ ज़ाएं और इधर उधर से पैसे जम्अ कर के 80 साल के बूढ़े हज़रात को ले आएँ। कोई बेचारा फ़ालिज का मरीज़ है तो किसी की हालत ऐसी है जो बात ही नहीं समझ सकता और तरबियती हल्कों के बीच में सो जाए, गुस्सा करे, इस्लामी

भाइयों को झाड़े, इस्तिन्जा खानों में भीड़ हो तो वहां लड़ाई शुरू कर दे या बेचारा बीमार हो जाए और अस्पताल का बिस्तर संभाल ले। ऐसों को तकलीफ़ न दी जाए कि इन के कुछ न कुछ मसाइल ज़रूर होते हैं। इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत करने वालों की उम्र 50 साल से ज़ियादा न हो इस से कम ही होनी चाहिये। ऐसे इस्लामी भाइयों को तरजीह दी जाए जिन की उम्र 50 साल से कम हो और उन्हें कोई बीमारी भी न हो। बा'जु इस्लामी भाई केन्सर के मरीजों को ले आते हैं। अगर किसी को गले का केन्सर है, हमें 112 फ़ीसद उस से हमदर्दी है मगर येह जब मो'तकिफ़ीन के साथ खाने के लिये बैठेगा तो सब खा रहे होंगे और येह शक्ल देख रहा होगा, इस तरह दूसरे मो'तकिफ़ीन किस तरह खाएंगे! उन को इस पर तर्स आएगा और उन का खाना दुश्वार हो जाएगा। ऐसा मरीज नहीं होना चाहिये जिस से दूसरों को परेशानी हो और येह खुद भी परेशान हो जाए और लाने वाले को कोस्ता रहे, फिर ज़िद करे कि मुझे वापस घर पहुंचा दो, मुझे क्या मा'लूम कि यहां इतना रश होगा वगैरा लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन लाने के लिये Quantity नहीं Quality देखिये। बा'जु अवकात केन्सर का ऐसा मरीज ले आते हैं जिस के ज़ख़्म से बदबू आ रही होती है, जब कि शर्ई मस्अला येह है कि जिस के ज़ख़्म, मुंह या कपड़ों से बदबू आ रही हो उसे मस्जिद में दाख़िल होना मम्नूअ है।<sup>(1)</sup>

① ... आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं: बच्चा और मज्नून और मज्जूम और बरस और बदबू के ज़ख़्म वाले और कच्चा लहसन, पियाज़ खाने वाले और मुफ़िसद (फ़साद करने वाले) और मूज़ी (ईज़ा देने वाले) शर्अ ने इन्हें मस्जिद में आने का हक़ न दिया बल्कि मस्जिद से दूर करने का हुक्म दिया।

(इज़हारुल हक़िक़ल जली, स. 64 मुल्तक़तन)

## मसाजिद में ना समझ बच्चों को न लाएं

येह भी ज़ेहन में रखिये कि रमज़ानुल मुबारक में मुलाक़ात की तरकीब नहीं हो पाती क्यूं कि रात छोटी होती है, मदनी मुज़ाकरा भी नमाज़े तरावीह के बा'द शुरूअ होता है फिर सहरी का वक्फ़ भी करना होता है। बा'ज इस्लामी भाई बच्चों को ले आते हैं और मुलाक़ात के लिये जिद करते हैं कि मुलाक़ात कर लो। आदमी बच्चों पर रहूम खा कर मुलाक़ात कर भी ले तो येह डंका बजा देंगे कि हमारे बच्चों की मुलाक़ात हो गई है तो अगले दिन 10 बच्चे और आ जाएंगे। फिर येही बच्चे मस्जिद में शोरो गुल करते, एक दूसरे के पीछे दौड़ते और कबड्डी खेलना शुरूअ कर देते हैं, वालिद नमाज़े तरावीह पढ़ रहा होता है और बच्चा पीछे शोर कर रहा होता है। बच्चों के हवाले से येह मस्अला याद रखिये कि ऐसा बच्चा जिस के बारे में ग़ालिब गुमान हो कि येह पेशाब कर देगा उसे मस्जिद में लाना जाइज़ नहीं और ऐसा बच्चा जिस के बारे में ग़ालिब गुमान हो कि येह बता देगा तो उसे मस्जिद में लाना मक्रूहे तन्ज़ीही या'नी ना पसन्दीदा है। (518/2، روضة المحتار) और अगर ऐसा बच्चा है जो मस्जिद में शोर मचाएगा, इधर उधर भागेगा, मस्जिद का एहतिराम पामाल करेगा नीज़ नमाज़ियों की तक्लीफ़ का बाइस बनेगा, भले 10 साल का ही क्यूं न हो बाप को उस के बारे में इल्म हो कि येह ऐसा ऐसा करेगा तो उसे मस्जिद में लाना गुनाह होगा।<sup>(1)</sup> ऐसे बच्चे

① ... आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अगर (बच्चों से) नजासत का ज़न्ने ग़ालिब हो तो उन्हें मस्जिद में आने देना हाराम और हालत मोहूतमल व मश्कूक हो तो मक्रूह। अगर बच्चे बल्कि बूढ़े भी बे तमीज़, ना मुहज़ज़ब हों, गुल मचाएं, बे हुर्मती करें, मस्जिद में न आने दिये जाएं।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/458 मुल्लक़तन)

उमूमन उन मसाजिद में होते हैं जो आबादी वाले अ़लाकों में बनी होती हैं, कई इस्लामी भाइयों को इस का तजरिबा होगा कि येह किस क़दर हल्ला गुल्ला करते हैं।

### बच्चों को ए 'तिकाफ़ में लाने के नुक़सानात

बा'ज बच्चे आठ नव साल के होते हैं और समझदार भी होते हैं, अकेले होंगे तो शराफ़त से बैठेंगे और नमाज़ वग़ैरा भी पढ़ेंगे लेकिन जहां येह एक से दो हुए सारी मस्जिद सर पर उठा लेंगे। लिहाज़ा अगर कोई कहे कि मेरा बच्चा शरीफ़ है, कुछ नहीं करेगा और दूसरा शख़्स भी येही सोच कर अपने बच्चे को मस्जिद में ले आए तो येह दोनों शरीफ़ मिल कर शराफ़त की धज्जियां बिखेर देंगे, बहुत सों को इस का तजरिबा भी होगा। बेहतर येही है कि बच्चों को अपने साथ न लाया जाए। अगर कोई बच्चा इस तरह करे तो उसे रोकना वाजिब होगा। इस के इलावा और भी काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा मसलन मदनी मुज़ाकरे में कोई ऐसा मौजूअ़ चल रहा हो जिसे सुनने में भी मज़ा आ रहा है और अचानक बच्चा बोले कि अब्बू भूक लग रही है या पानी पीना है फिर उस वक़्त पानी पिलाने जाएंगे तो जो बयान हो रहा था उस से बच्चे का वालिद तो महरूम होगा ही साथ साथ दो चार लोग और भी उस की वजह से परेशान होंगे। फिर बच्चा कहेगा अब्बू मुझे पेशाब आ रहा है तो उसे ले कर जाना पड़ेगा, नहीं ले कर गए तो वोह वहीं कर देगा। बच्चे इस तरह की गड़बड़ कर देते हैं, कभी कहेगा नींद आ रही है क्यूं कि समझ नहीं आता तो फिर नींद आती है, अब उन को सुलाने का मस्अला होता है, न येह खुद सुनते समझते हैं न वालिद को सुनने समझने देते हैं लिहाज़ा मेहरबानी कर के बच्चों को

अपने साथ न लाएं और येह मदनी इल्लिजा सिर्फ़ माहे रमज़ान के लिये ही नहीं बल्कि पूरे साल के लिये ज़ेहन नशीन कर लीजिये । Quantity के बजाए Quality पर नज़र रखिये, चाहे बहुत सारों की बजाए चन्द ही इस्लामी भाई ला सकें । मगर जिन इस्लामी भाइयों को लाया जाए वोह सुलझे हुए और ख़ौफ़े खुदा वाले हों कि उन को देख कर अल्लाह याद आ जाए, न कि ऐसे हों कि कोई बाहर का बन्दा आ कर देखे तो बदज़न हो कर चला जाए और कहे कि हम ने तो बड़ी ता'रीफ़ सुनी थी जब कि यहां तू तुकार और लड़ाई झगड़े हो रहे हैं । (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/245)

**सुवाल :** कितनी उम्र के इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ में बिठाया जाए ?<sup>(1)</sup>

**जवाब :** जहां जहां इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ या पूरे महीने के ए'तिकाफ़ की तरकीब हो वहां और बिल खुसूस मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के लिये इस बात का ख़याल रखा जाए कि मो'तकिफ़ 20 साल से छोटा और 50 साल से बड़ा न हो क्यूं कि बड़ी उम्र के बुजुर्ग संभाले नहीं जाएंगे और इन्हें जब दौराने मदनी हल्का और मदनी मुज़ाकरा नींद आएगी तो येह टांगें फैला कर बिल्कुल बीच में सो जाएंगे और फिर इन्हें कोई रोक भी नहीं पाएगा । इस लिये कि अगर बूढ़ों को कुछ कहा जाए तो उन्हें गुस्सा भी जल्दी आ जाता है । बूढ़े बेचारे मा'ज़ूर और बीमार होते हैं और उन का हाफ़िज़ा, हाज़िमा और हर उज़्व कमज़ोर हो जाता है, सिर्फ़ ज़बान ताक़त वर होती है जिस से स्टेट फ़ायर होते हैं तो यूं बा'ज़ अवकात बूढ़े खुद भी तक्लीफ़ उठाते हैं और दूसरों के लिये भी तक्लीफ़ का बाइस बन जाते हैं, इस लिये

① ... येह सुवाल शो'बए मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ का इनायत किया हुवा है ।



मा'जूरों और बूढ़ों को ए'तिकाफ़ में न लाया जाए। मेट्रिक के तुलबा और जामिअतुल मदीना और अशिकाने रसूल के मदारिस के तुलबाए किराम अपना कार्ड दिखा कर ए'तिकाफ़ कर सकते हैं और अगर इन में कोई 20 साल से कम उम्र का भी हो तो उसे भी शायद ए'तिकाफ़ में बैठने की रिआयत है और येह सब इस लिये है ताकि तुलबा छुट्टियों में इधर उधर ख़्बार होने के बजाए अल्लाह पाक के घर में बैठ जाएं और दीन सीख लें कि इस से इन को फ़ाएदा होगा। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/323)

**सुवाल :** जो इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में सीखने सिखाने के मदनी हल्कों में शिर्कत नहीं करते वोह ए'तिकाफ़ में बैठना चाहें तो क्या किया जाए ?<sup>(1)</sup>

**जवाब :** हमारी मजालिस और जिम्मेदारान इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ के लिये ऐसे अफ़ाद के कार्ड हरगिज़ न बनाएं। ए'तिकाफ़ में एक ता'दाद ऐसी भी आती है कि जिसे दुआएं और नमाज़ वगैरा सिखाने के लिये लगाए गए मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के हल्के में शिर्कत करने से कोई दिलचस्पी नहीं होती, येह ए'तिकाफ़ में सिर्फ़ खाते पीते और जान बनाते हैं, ऐसे लोग चौपाल लगाते हैं और मस्जिद के बाहर सहन में बैठ कर गपें मार रहे होते हैं और उन से मिलने के लिये आने वालों में से कोई उन के लिये खिचड़ा ला रहा होता है और कोई खिचड़ी ला रहा होता है जिसे येह सब मिल कर खा रहे होते हैं तो ऐसों से हाथ जोड़ कर मा'ज़िरत है कि येह ए'तिकाफ़ में न आएँ और हमें अपने शर से बचाएँ। हमें ए'तिकाफ़ में बिठाने के लिये वोह इस्लामी भाई चाहिए कि जो ए'तिकाफ़ में इबादत व तिलावत करें,

① ... येह सुवाल शो'बए मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत إمامت بركاتهم العالیه का इनायत किया हुवा है।

फ़र्ज़ नमाज़ें बा जमाअत पढ़ें और सुन्नतें और दुआएं सीखने सिखाने के हल्कों और मदनी मुजाकरों में 100 फ़ीसद शर्कत करें। याद रखिये ! हमें ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ीन की भीड़ और Quantity (या'नी ता'दाद) नहीं बल्कि Quality (या'नी मे'यार) चाहिये। जो इस्लामी भाई मो'तकिफ़ीन की कसीर ता'दाद ले कर आते हैं उन्हें चाहिये कि भले वोह चन्द इस्लामी भाई ले कर आएँ मगर उन में Quality (या'नी मे'यार) वाले इस्लामी भाई हों जो यहां से सीख कर जाएँ। मगर आम तौर पर Quality (या'नी मे'यार) नहीं Quantity (या'नी मिक्दार) होती है और ऐसे अपराद ए'तिकाफ़ के लिये आते हैं कि जिन्हें सीखने सिखाने में दिलचस्पी नहीं होती, वोह दूसरों को भी तंग कर रहे होते हैं और इस के साथ साथ येह कबाब समोसे खाते हैं और फिर बीमार हो कर हमारे क्लीनिक की दवाइयां भी खा जाते हैं। दा'वते इस्लामी के तहत हर जगह मो'तकिफ़ीन के लिये क्लीनिक का एहतियाम नहीं होता अलबत्ता मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में एक छोटा सा क्लीनिक काइम किया जाता है जिस में महदूद दवाएं होती हैं और कुछ डॉक्टर रज़ाकाराना तौर पर तशरीफ़ लाते हैं। अब ऐसा नहीं कि जो बेचारा बीमार हो कर क्लीनिक जाए उस के बारे में येह कहा जाए कि येह खा खा कर बीमार हुवा है क्यूं कि ए'तिकाफ़ में रश होता है और बा'ज़ लोगों की तबीअतों में नज़ाकत होती है जिस के बाइस उन्हें रश की वजह से नींद नहीं आती तो बे आरामी की वजह से वोह बीमार हो जाते हैं। बहर हाल अपनी सिद्दहत का ख़याल रखिये और बस उन लोगों को ए'तिकाफ़ के लिये लाइये जो दीन का जज़्बा रखते हों और रिज़ाए इलाही पाने की ख़ातिर आएँ। बक़िय्या को न लाइये और न ऐसों को ए'तिकाफ़ कार्ड दिया जाए। बा'जों

के बारे में तो मजलिसे ए'तिकाफ़ को भी पता चल जाता होगा कि येह ए'तिकाफ़ में ख़ाली खाएं पियेंगे और अपना शर दूसरों तक पहुंचाएंगे तो मो'तकिफ़ीन को ऐसे लोगों के शर से बचाना ज़रूरी है ।

## सैरो तफ़रीह करने वालों को भी ए'तिकाफ़ में न लाया जाए

इसी तरह सैरो तफ़रीह करने वालों को भी ए'तिकाफ़ में न लाया जाए । चूंकि बा'ज अ़लाकों में समुन्दर नहीं है इस लिये एक ता'दाद समुन्दर देखने के लिये भी ऐसे अ़लाकों से ए'तिकाफ़ में आ जाती है और फिर येह समुन्दर देखने जाते हैं और वहां ऊंट पर बैठ कर तस्वीरें खिंचवाते हैं जिन्हें वोह बा'ज अवक़ात सोशल मीडिया पर भी अ़ाम कर देते हैं तो ऐसों को दा'वते इस्लामी वाला न कहा जाए । दा'वते इस्लामी समुन्दर की तरह है और जब समुन्दर में जाल फेंका जाए तो उस में मछली भी आएगी, केकड़ा भी आएगा और हो सकता है दरियाई सांप भी आ जाए तो इस तरह के इस्लामी भाई भी ए'तिकाफ़ में आते हैं जो दा'वते इस्लामी को बदनाम करते हैं, लिहाज़ा घूमने फिरने वालों को भी ए'तिकाफ़ के लिये मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना न लाया जाए । हमारे यहां जो समुन्दर है उस का नाम “बहरे अ़रब” है तो अगर किसी ने समुन्दर देखना है तो वोह ए'तिकाफ़ के इलावा आए और इस निय्यत से समुन्दर देखे कि येह हिजाजे मुक़द्दस को चूमने जाता है । पहले यहां के समुन्दर से सफ़ीना (समुन्दरी जहाज़) भी हाजियों का काफ़िला ले कर जद्दा शरीफ़ जाया करता था । याद रखिये !

समुन्दर देखना गुनाह नहीं है मगर जब ए'तिकाफ़ के लिये आएँ तो पूरा वक्त यहीं बसर करें और समुन्दर और बाजारों का रुख़ न करें। यह बात भी ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि ए'तिकाफ़ के लिये सुवाल करना जाइज़ नहीं है। लिहाज़ा जब ए'तिकाफ़ के लिये आएँ तो किसी से इस तरह का सुवाल न करें कि मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ के लिये जाना है और मेरे पास आने जाने का किराया और जेब ख़र्ची नहीं है लिहाज़ा आप मेरी मदद कर दीजिये।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/324 मुल्लक़तन)

**सुवाल :** क्या मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आबे ज़मज़म पीने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत ज़रूरी है ?

**जवाब :** आबे ज़मज़म शरीफ़ पीने या खाना खाने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं हो सकती और अगर कर ली तो यह निय्यत मो'तबर नहीं। ए'तिकाफ़ की निय्यत सिर्फ़ सवाब के लिये कर सकते हैं। मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी में भी ग़ैरे मो'तकिफ़ या'नी जिस ने ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं की उस के लिये आबे ज़मज़म पीना जाइज़ नहीं। अगर पहले ए'तिकाफ़ की निय्यत नहीं की थी और अब आबे ज़मज़म पीना है तो इस के लिये यह निय्यत नहीं की जा सकती बल्कि सवाब की निय्यत से ए'तिकाफ़ की निय्यत करें, फिर जि़क्रो दुरूद पढ़ें मसलन बारह मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लें, अब आबे ज़मज़म पीना जाइज़ हो जाएगा।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/451)

## अगले हफ्ते का रिसाला

